P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

युवा छात्राओं में परिवार संबंधी बदलते हुये मूल्य प्रतिमान

सुदीप कौर
शोधार्थी,
समाज शास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। सामाजिक सरंचना में सदस्य को परिवार की केन्द्रीय स्थिति का घोतक माना जाता है और परिवार से ही समाज का निर्माण होता है। इसलिये समाज का आधार परिवार होता है। समाज के व्यक्तियों के व्यवहारों के आधार पर सामाजिक संगठन बनता है। व्यवहार और आचरण व्यवस्था ही सम्पूर्ण समाज को संचालित करने के लिए उत्तरदायी होती है जिससे समाज के व्यक्तियों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

सामाजिक मूल्य ही सम्पूर्ण समाज के क्रियान्चन का आधार है और सामाजिक मूल्यों का पोषण प्रमुखयता स्त्री के द्वारा ही सम्भव है। एक बालक जो बड़ा होकर देश का जिम्मेदार नागरिक बनता है और समाज का प्रतिनिधित्व करता है, उसकी प्राथमिक शिक्षा उसकी माता द्वारा ही संभव है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति तुलनात्मक है। जो स्रोत समाज में सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन के लिये उत्तरदायी है उन्हें इस शोध सार में पारिवारिक संस्था के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : परिवार, मूल्य प्रतिमान, शिक्षित युवा छात्रायें, नवीनीकरण

प्रस्तावना

साामाजिक जीवन का प्रथम सोपान परिवार समाज की सर्वव्यापी और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। सामाजिक सरंचना में सदस्य परिवार की केन्द्रीय स्थिति का द्योतक है और परिवार से ही समाज का निर्माण होता है। इस प्रकार परिवार एक सार्वभौमिक संस्था के साथ–साथ अनेक समाजों में सामाजिक सरंचना की मूल इकाई भी है। इसी से मिलकर संयुक्त–परिवार, वंश–समूह, गोत्र'समूह, भ्रातृ–दल, द्वि–दल, उपजातियाँ, जनजातियाँ, समाज एवं ग्रामीण समाज आदि का निर्माण होता है।

विश्व के विभिन्न देशों में परिवार के विशिष्ट स्वरूपो में और व्यवहार के तरीकों में विभिन्नता दिखाई देती है। समाजशास्त्रियों के द्वारा परिवार के आदर्श और यथार्थ दोनों स्वरूपों का अध्ययन निरन्तर किया जाता रहा है। भारतीय सामाजिक सरंचना में परिवार नामक संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परिवार चाहे एकांकी हो या संयुक्त, दोनों का अपना अलग–अलग महत्व होता है।

आधुनिकीकरण, नगरीयकरण, औद्योगिकरण और पाश्चात्य समाज के बढ़ते प्रभाव और बदलते हुये मूल्यों के कारण समाज में नई सोच उभरकर सामने आई है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, अंधी आधुनिकता की दौड़, आत्मीयता एवं समर्पण में कमी और पाश्चात्य जीवन शैली का बढ़ते प्रभाव के कारण औपचारिक सम्बन्धों का बोलबाला हुआ है। रूढ़िवादी परम्पराओं को देखने के दृष्टिकोण परिवर्तित हुये हैं, इसमें पर्दा प्रथा प्रमुख है। पारिवारिक निर्णयों में भी स्त्री की भागीदारी का प्रतिशत भी सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन और समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी बना है। सामाजिक विचारधारा यह निर्णय करती है कि मूल्य जिसमें परिवर्तन हुआ है, वह स्वीकारने योग्य है या नहीं।

हेरी एम जॉनसन (1966) ने मूल्यों की अवधारणा को या तो मानक संस्कृति के आधार पर अथवा केवल व्यक्तिगत आधार पर परिभाषित किया है। इसके अनुसार आचरणों की तुलना करके या तो उन्हें स्वीकार किया जाता है अथवा अस्वीकार किया जाता है। यदि समूह और संस्कृति को यह विश्वास हो जाये कि वह अनुकरण के योग्य है तो उसको मूल्यों के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है। राब्र्ट विलियम्स ने मूल्यों की चार विशेषतायें बताई है– "मूल्यों का निर्माण समाज और व्यक्तियों के अपने अनुभवों के आधार पर होता है। मूल्यों की अभिव्यक्ति में भावनात्मक पक्ष हैं। यद्यपि भावनाएँ प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं की जाती है, लेकिन व्यवहार की संभावनायें यही है कि मूल्यों को किस भावना के आधार पर स्वीकार किया जाये। मूल्यों के संबंध में क्या उचित है और क्या

अनुचित प्रायः इसका निर्धारण समाज के सदस्यों का वृहद् समूह ही तैयार करता है।

धारणा है जो स्पष्टीकरण के माध्यम से यह तर्क देती है कि विशिष्ट संदर्भ, यथार्थ रूप से सत्य है या असत्य है। प्रस्तुत शोध में व्यवसायिक पाठ्यक्रर्मो में अध्ययनरत् युवा छात्राओं के संदर्भ में परिवार संबंधी बदलते हुये मूल्य प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन की प्रकृति तुलनात्मक हैं, जिसमें कोटा विश्वविद्यालय कोटा और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली की युवा छात्राओं पर प्राथमिक सूचना स्रोत्रों के द्वारा आंकड़े प्रस्तुत किये है। इस अध्ययन के प्रमख उद्देश्य इस प्रकार से है–

1. विवाह के पश्चात् परिवार की प्राथमिकता के संबंध में अवलोकन
2. पारिवारिक सदस्यों के मध्य आत्मीय संबंधों के स्थान पर औपचारिक संबंधों के होने में मन्तव्य
3. परिवार में लड़के व लड़की के बीच भेदभाव की स्थिति का अवलोकन
4. पर्दा प्रथा और पारिवारिक निर्णयों में स्त्री की भागीदारी का अवलोकन।

साहित्यवलोकन

सीता मेनन (1996) ने "Article below thirty published in femina magazine of Feburary 8" में अपने अध्ययनों में पाया कि शिक्षित भारतीय महिलायें वर्तमान समय में अच्छी नौकरियों में कार्यरत एवं विलम्ब विवाह के पक्ष में हैं। इनके पीछे उनके स्वयं के ज्ञान या बोध है। कुछ का मानना है कि वह अपने व्यवसाय या कैरियर में इतने व्यस्त है कि विवाह उन्हें अपने ध्येय से दूर कर देगा एवं अन्य दुविधाओं को बढ़ाने में सहायक होगा। अधिकतर महिलायें यह मानती है कि ऐसा नहीं है कि उन पर विवाह करने के लिए दबाव नही डाला जाता है। दबाव वह महसूस करती तो है, पर वे अपने अस्तित्व के साथ एकल जीवन बिताने के पक्ष में भी है।

शर्मा एवं चंदोला (1998) ने "Article 'When their paths cross gave the opinion'" में बताया है कि भारतीय समाज में अन्तर्जातीय और अन्तधर्मियों में विवाह करना आम बात हो गई है। ग्रामीण भारत की अपेक्षा शहरी समाज में अन्तर्जातीय विवाह ज्यादातर स्वीकार करने लग गये है। प्रेम विवाहों में वृद्धि हुई है। आम जन व्यवसाय या कैरीयर को ध्यान में रखकर जीवन साथी का चुनाव करने लग गये। इसके तहत नये युगल एक–दूसरों को ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकते है। जीवन की चुनौतियों का मुकाबला कर सकते है।

चौधरी (1999) ने अपने आर्टिकल "Today's Students have no time to start and share published in the Times of India of Aug. 1999" में किए गए अपने अध्ययनों में बताया कि महाविद्यालयी कैम्पस में अध्ययनरत विद्यार्थियों की दयनीय दशा पर चित्रण प्रस्तुत किया है। आज का विद्यार्थी व्यस्त है। यहाँ तक कि उसे अपने जीवन का आनन्द प्राप्त करने तक का समय नहीं है, लेकिन आज कुछ विद्यार्थी अपनी योग्यता या प्राप्ति को लेकर संतुष्ट नहीं है। वे भावी भविष्य को लेकर आशंकित है। इससे समाज में अमानवीय घटनाओं की वृद्धि हो रही है, जैसें आत्महत्या होने लगी है। उदाहरणार्थ–सिविल सर्विस में अनुत्तीर्ण होने पर अधिकतर विद्यार्थी जीवन लीला समाप्त कर लेते है। अतः जीवन से संबंधित मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है।

रूहेला (2000) ने "Indian Society and Education in 2010: Futuristic perceptions of Indian College Youth" में जामिया मिलिया ईस्लामिया में अध्ययनरत् (1998–99) के समयानुसार 30बी.एड विद्यार्थियों के भविष्य की रूपरेखा और उनसे संबंधित बोध एवं ज्ञान को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। अतः इनके अनुसार संयुक्त परिवार प्रणाली का पतन हो रहा है। राजनीतिज्ञ भ्रष्टाचारी आचरण में लिप्त है। आर्थिक समस्याएँ ज्यादा से ज्यादा है, प्रेम विवाह और तलाक की घटनाएँ समाज में आम होगी। बुजुर्गो के प्रति सम्मान और आदर भाव कम होगा। तकनीकी ज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का प्रचलन होगा, दूरस्थ शिक्षा का प्रचलन होगा। भारत का युवा वर्ग उत्तेजित और निराश भी होगा, परन्तु सभ्य भी होगा।

FENG (फाइनेन्सियल एक्जीक्युटिव नेटवर्किंग ग्रुप) और कोनी ने मार्च 2009 में "Article 'The Impact of values on Career Choice' "में बताया कि आज के युवा सोचते तो है कि वे खुश है, पर वास्तविक परिणाम इसके विपरीत है। हम विवाह पद्धति, अपने स्वरूप को प्लास्टिक सर्जरी द्वारा और घरों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदल तो रहे है, पर यह सब क्षणिक है। इन सबका प्रमुख कारण मूल्य है। अतः मूल्यों में परिवर्तन का अध्ययन करना होगा, क्योंकि मूल्यों में परिवर्तन जीवन–वृत्ति के तरीके को बदलेगा, जिससे सही मायनों में प्रसन्नता प्राप्त होगी। मूल्यों में परिवर्तन तो केवल आन्तरिक रूप से ही संभव है। मनुष्य को अपने किए हुए कार्यों का असर देखने के लिए समय चाहिए, तभी तो वह मूल्यों की समीक्षा कर सकेगा।

Result and Discussion

भारतीय सामाजिक सरंचना में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार की प्रणाली को सहर्ष अपनाया गया है। बुजुर्गो के आर्शीवाद और छत्र छात्रा में व्यक्तिगत सुरक्षा एवं मूल्यवान अनुभवों के कारण इसे प्राथमिकता दी गई, जबकि कुछ लोग इस मन्तव्य के विपरीत विचार रखते है। वे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते है, इसीलिये एकांकी परिवार को अधिक पसन्द करते हैं। व्यवसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् युवा छात्राएँ विवाह के पश्चात् संयुक्त या एकांकी परिवार में रहने की प्राथमिकता देगी, इसका अध्ययन निम्नलिखित सारणी सं. 1 से किया जा सकता है।

सारणी संख्या 1
विवाह के पश्चात् पविार को प्राथमिकता के सम्बन्ध में मन्तव्य

क्र.सं.	परिवार की प्राथमिकता	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय, कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	संयुक्त परिवार	37	74%	22	55%	59	65%
2.	एकांकी परिवार	11	22%	13	33%	24	27%
3.	कोई राय नहीं	2	4%	5	12%	7	8%
	योग	50	100%	40	100%	90	100%

सारणी के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कोटा विश्वविद्यालय, कोटा में अध्ययनरत् 74 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार से, 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एकांकी परिवार के पक्ष में अपनी राय व्यकत की, जबकि 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई भी राय व्यक्त नहीं करना चाहा कि वे विवाह के पश्चात् परिवार के किस स्वरूप को प्राथमिकता देना चाहेगी।

उपरोक्त संदर्भ में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली में व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएँ क्रमशः 55 प्रतिशत संयुक्त परिवार को तथा 33 प्रतिशत एकांकी परिवार को प्राथमिकता देती है, जबकि 12 प्रतिशत छात्राएँ इस संबंध में कोई राय व्यक्त करना नहीं चाहती है।

संयुक्त रूप से देखें तो 65 प्रतिशत छात्राएँ विवाह पश्चात् संयुक्त परिवार में तथा 27 प्रतिशत छात्राएँ एकांकी परिवार में रहना चाहती है, जबकि 8 प्रतिशत छात्राएँ अपनी राय देने में असमर्थ पाई गई है।

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि बदलते सामाजिक परिवेश में भी उच्च शिक्षा के व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएँ विवाह पश्चात् संयुक्त परिवार में रहना चाहती है, जिससे कि परिवार में उन्हें मानसिक सुरक्षा और सबलता प्राप्त हो सके, जिससे मानसिक तनाव से दूर रहने हुए वे धीरे–धीरे परिवार की जिम्मेदारियों को वहन कर सके।

संयुक्त परिवार में प्रेम, दया, सहयोग, वात्सल्य, समर्पण की भावनाएँ विदित होती है और इन्हीं भावनाओं से वह अपने परिवार को सींचता है। आधुनिक युग में संकट के समय शारीरिक एवं मानसिक सबलता प्राप्त होती है। संकट के समय में बड़े–बजुर्गों के अनुभव द्वारा जीवन को एक नई सोच एवं दिशा प्राप्त होता है। इसके द्वारा बच्चों का समाजीकरण सकारात्मक रूप से होती है। परिवार के सदस्यों द्वारा अपनाये गये मूल्यों के अनुसार एवं अनुभवों द्वारा जीवन में सामंजस्य स्थापित करने की कला भी प्राप्त करती है।

आधुनिकीकरण और पाश्चात्य समाज के बढ़ते प्रभाव के कारण परिवार का आकार भी बदलने लगा है। शादी के पूर्व ही युवा छात्रायें परिवार का आकार तय करने लगी है और यह दोनों युगल की आपसी सहमति का ही परिणाम है।

प्रारम्भिक स्तर पर व्यक्ति संयुक्त परिवार में रहने का इच्छुक था, परन्तु परिस्थितियों के कारण एवं नौकरी की विवशता होने के कारण वह एकांकी परिवार का निर्माण करता है। इसके लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली, अन्धी आधुनिकता की दौड़, आत्मीयता एवं समर्पण में कमी और पाश्चात्य जीवन शैली का बढ़ता प्रभाव है। इसी वजह से वर्तमान युग में पारिवारिक सदस्यों के मध्य आत्मीय संबंधों के स्थान पर औपचारिक संबंधों में बढ़ोत्तरी हो रही है। अध्ययन में इससे संबंधित जो तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हें निम्न सारणी के माध्यम से देखा जा सकता है।

सारणी संख्या 2
पारिवारिक सदस्यों के मध्य आत्मीय संबंधों के स्थान पर औपचारिक संबंधों का होना

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय, कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	सहमत	26	52%	22	55%	48	53%
2.	असहमत	15	30%	16	40%	31	35%
3.	कोई राय नहीं	9	18%	2	5%	11	12%
	योग	50	100%	40	100%	90	100%

अध्ययन में प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त रूप से 53 प्रतिशत छात्राएँ इस संबंध में अपनी सहमति व्यक्त करती है, जिसमें से 52 प्रतिशत छात्राएँ कोटा विश्वविद्यालय कोटा से संबंधित है। 55 प्रतिशत छात्राएँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के व्यवसायिक पाठ्यक्रम से संबंधित है, जबकि दोनों वर्गों की 35 प्रतिशत छात्राएँ इस बात को स्वीकार नहीं करती है कि परिवार के मध्य कोई औपचारिकता है। इस राय को व्यक्त करने में 30 प्रतिशत छात्राएँ कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से संबंधित है और इसी तरह 40

प्रतिशत छात्राएँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के व्यवसायिक पाठ्यक्रम से संबंधित है, जबकि दोनों विश्वविद्यालयों में 12 प्रतिशत छात्राएँ ऐसी भी है, जिन्होंने इस संबंध में अपनी कोई भी राय व्यक्त नहीं की है।

अतः निष्कर्ष है कि भुमण्डलीकरण, नगरीयकरण, आधुनिकीकरण, पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में बड़े परिवारों में सगे भाईयों के अलग स्थानों में कार्यरत होने के कारण वे छोटे परिवारों में बदल रहे है। दूरियाँ बढ़ने के कारण आत्मीयता के स्थान पर औपचारिकता आ रही है।

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है, जबकि दक्षिण भारत में मातृसत्तात्मक परिवार बहुतायत में है। लड़के और लड़की के समान अधिकारों को उत्तर भारत में लागू करने हेतु लैंगिक भेदभाव को समाप्त किया जाना था और इसके लिये संवैधानिक प्रावधानों का सहारा लिया गया। परिवार में लड़के और लड़की के मध्य के मध्य भेदभाव की स्थिति को जानने के लिये व्यवसासयिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् युवा छात्राओं से विचार विमर्श करने पर विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि उनके परिवारों में लड़के और लड़कियों के मध्य उनके माता–पिता द्वारा किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है और दोनों को बराबर अधिकार प्राप्त है। यह निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 3
परिवार में लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव की स्थिति

क्र.सं.	भेदभाव की स्थिति	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय, कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	हाँ	6	12%	7	18%	13	14%
2.	नहीं	44	88%	33	82%	77	86%
	योग	50	100%	40	100%	90	100%

इसके विपरीत दोनों विश्वविद्यालयों की 14 प्रतिशत छात्रायें ऐसी है जो यह मानती है कि परिवारों में उनके माता–पिता एवं सगे–संबंधी द्वारा लैंगिक भेदभाव किया जाता है।

वैदिक काल में भारतीय समाज गौरवपूर्ण था परन्तु इसके बाद धीरे–धीरे स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन होने लगा और कुछ रूढ़िवादी परम्पराओं का अनुसरण होने लगा, जिसमें पर्दा प्रथा प्रमुख है।

सारणी संख्या 4
परिवार में स्त्रियों के पर्दा रखने की स्थिति

क्र.सं.	पर्दा रखने की स्थिति	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	हाँ	19	38%	5	13%	24	27%
2.	नहीं	31	62%	35	87%	66	73%
	योग	50	100%	40	100%	90	100%

उपर्युक्त सारणी अध्यनरत् उत्तरदाताओं के परिवार मे पर्दा रखने की स्थिति से संबंधित है। सारणी के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त रूप से 27 प्रतिशत छात्राएँ यह स्वीकार करती है कि उनके परिवार में पर्दा–प्रथा का प्रचलन है। इनमें से 38 प्रतिशत छात्राएँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के व्यवसायिक पाठ्यक्रम से संबंधित है। जबकि इसके विपरीत 73 प्रतिशत छात्राएँ पर्दा–प्रथा रखने में विश्वास नहीं करती है। इनमें से 2 प्रतिशत छात्राएँ कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से संबंधित है, जबकि 87 प्रतिशत छात्राएँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के व्यवसायिक पाठ्यक्रम से संबंधित है।

तुलनात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि कोटा विश्वविद्यालय, कोटा और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली की कुल छात्राएँ अर्थात् 73 प्रतिशत छात्राएँ अपनी परम्परागत प्रस्थिति से उच्च प्रस्थिति को प्राप्त कर रही है और पर्दा प्रथा जैसी रूढ़िवादी परम्परा को गलत मानती है। वर्तमान समय में ग्रामीण परिवेश को छोड़कर शहरी परिवेश की महिलाओं में पर्दा प्रथा अत्यधिक तीव्रता के साथ समाप्त हो रही है। इस संबंध में स्वयं के लिए पर्दा प्रथा को उचित/अनुचित मानने के संबंध में निम्न साररणी से जो तथ्य प्राप्त हुए है, वह इस प्रकार से है–

सारणी संख्या 5
स्व्यं के लिए पर्दा प्रथा को उचित मानने की स्थिति के संबंध में मन्तव्य

क्र.सं.	पर्दा रखने की स्थिति	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय, कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	हाँ	5	10%	7	18%	12	13%
2.	नहीं	45	90%	33	82%	78	87%
	योग	50	100%	40	100%	90	100%

उपर्युक्त सारणी संख्या 5 में पर्दा प्रथा को उचित मानने एवं न मानने की स्थिति से सम्बन्धित है। अध्ययन में तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दोनों विश्वविद्यालयों के व्यवसायिक पाठ्यक्रम में सलंग्न 13 प्रतिशत युवा छात्राएँ ऐसी है, जो पर्दा प्रथा को उचित मानने की स्थिति में अपना मत देती है। इस पक्ष में तर्क देते हुए युवा उत्तरदाताओं ने कहा कि पर्दा प्रथा परिवार में बुजुर्गों के प्रति आदर एवं सम्मान का प्रतीक है। इससे परिवार में बड़ो के प्रति प्रेम, आदर की भावना व्यक्त होती है।

जबकि इसके विपरीत कुल 87 प्रतिशत छात्राएँ ऐसी है जो कि परिवार में पर्दा प्रथा को उचित नहीं मानती है। इनमें से 90 प्रतिशत छात्राएँ कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से सम्बन्धित है और 82 प्रतिशत छात्राएँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली से सम्बन्धित है। इसके पीछे अधिकतर उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए युवा छात्राएँ है, जिनका मत है कि परिवार में बड़े–बुजुर्गों के प्रति सम्मान, आदर, आपके मन में होना चाहिए एवं यह भावनाओं के रूप में अभिव्यक्त होता है न कि किसी बाहरी सामाजिक प्रथा द्वारा। आज भी भारतीय समाज में उच्च हिन्दू जातियों के साथ अन्य पिछड़ी जातियाँ भी इस कुप्रथा से जकड़ी हुई है। इसकी झलक भारत के विभिन्न हिस्सों में देखी जा सकती है। उच्च शिक्षित युवा छात्राएँ विचारों की स्वतन्त्रता एवं परिपक्वता आदि के कारण पर्दा प्रथा को एक समस्या के रूप में स्वीकार करती है।

वर्तमान समय में प्रत्येक उच्च शिक्षित एवं उच्च विचारों वाली महिला स्वछंदता से जीवन–यापन करना चाहती है। उसे पारिवारिक बंधन अच्छे नहीं लगते है। इन बंधनों में वह अपने आप को जकड़ा हुआ महसूस करती है। यदि विवाह के उपरान्त स्त्री को परिवार में पर्दा प्रथा को अपनाने या पर्दा करने के लिए कहा जाता है तो वह इसे अपनी स्वतंत्रता का हनन समझती है। प्रत्येक शिक्षित महिला परिवार में महत्वपूर्ण मुद्दों में अपनी भागीदारी की समर्थक, जिसका विश्लेषण निम्न सारणी में किया गया है।

सारणी संख्या 6
पारिवारिक निर्णयों में स्त्रियों की भागीदारी से संबंधित मन्तव्य

क्र.सं.	निर्णय की स्थिति	उत्तरदाताओं की प्रकृति					
		कोटा विश्वविद्यालय, कोटा		भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1.	हाँ	49	98:	40	100:	89	99:
2.	नहीं	1	2:	–	–	1	1:
	योग	50	100:	40	100:	90	100:

उपर्युक्त सारणी यह स्पष्ट होता है कि कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के व्यवसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत युवा छात्राएँ जिनका प्रतिशत 98 है तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली में अध्ययनरत् छात्राएँ जिनका प्रतिशत 100 है तथा संयुकत रूप से 99 प्रतिशत युवा छात्राएँ पारिवारिक निर्णयों में स्त्रियों की भागीदारी को उचित मानती है एवं इसे चाहती है। सिर्फ एक प्रतिशत छात्राएँ पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी नहीं चाहती है। निष्कर्षतः वर्तमान समय, भूतपर्व मूल्य प्रतिमानों में परिवर्तन एवं आर्थिक स्वतन्त्रता व स्वाभिमान का संकेत देने लगी है।

निष्कर्ष

व्यवसायिक पाठ्क्रमों में अध्ययनरत् युवा छात्राओं के संदर्भ में परिवार सम्बन्धी मूल्य प्रतिमान बदल रहे हैं। बदलते हुए परिवेश में पुनः छात्राएँ संयुक्त परिवार में रहने की इच्छुक पाई गई, परन्तु छोटे आकार वाले संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देने लगी। एक ऐसे संयुक्त परिवार जिसकी छत तो एक हो, पर रसाईं अलग–अलग हो। बीज त्यौहारों पर सारा परिवार एकत्रित हो, क्योंकि वर्तमान में संयुक्त परिवारों का आधार भावनात्मक संबलता से है। पारिवारिक सदस्यों के मध्यम आत्मीय संबंधों के स्थान पर औपचारिक संबंधों में बढ़ोतरी आई है क्योंकि भूमण्डलीकरण पर औपचारिक संबंधों में बढ़ोतरी आई हैं क्योंकि भूमण्डलीकरण, नगरीयकरण के प्रभाव से सगे भाईयों के नौकरी के कारण अलग–अलग स्थान पर कार्यरत होने के कारण वे एंकाकी परिवार में बदल रहे है। दूरियाँ बढ़ने के कारण आत्मीयता के स्थान पर औपचारिकता आ रही है। परिवार में लड़के और लड़कियों

के बीच भेदभाव की स्थिति खत्म हुई है। तभी लड़कियाँ घर से बाहर निकल कर पुरूषों के समान आजीविका कमा रही है और बराबर की हकदार है। परिवार मे स्त्रियों के पर्दा रखने को बहुमत रूप से छात्राओं ने नकारा है। उनका मत है कि परिवार में बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान मन में होना चाहिये और भावनाओं के रूप में अभिव्यक्त होना चाहिये न कि किसी बाहरी सामाजिक प्रथा द्वारा। पर्दा प्रथा की बेड़ियों से मुक्त होकर वे समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त महिलायें विवाह के पश्चात् पारिवारिक जिम्मेदारियों को कुशल तरीके से निभाना चाहती है, इसीलिये वे अपने परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में प्रभावशाली एवं निर्णायक भूमिका निभाना चाहती है। अतः शिक्षा ने उनके विचारों को परिष्कृत किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Johnson, Harry M. (1966), 'A Systematic Introduction', Allied Publication, Bombay, p. 50.

Menon, Sita (1996) in their article 'Below thirty' published in femina magazine on Feburary, 8.

Sharma, S. and Chandola, P. (1998), 'When their path cross', The Hindustan Times, October 14.

Chaudhary (1999), 'Today's Student have no time to start and share', The Times of India, August 8.

Ruhela, S. P. (1996), 'The Emerging Concept of Education in Human Values', Regency VII, p. 357.

Connie, M. (2009), 'The Impact of Values on Career Choice', FENG (Financial Executive Networking Group).